विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथमवर्ष, प्रथमपत्र
किरातार्जुनीयम्- प्रथमसर्ग
पद्यांश व्याख्या

डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

दिनांक - 04/06/2021

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते
विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।
परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां
प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥25॥

अन्वयः- तत् त्वयि जिह्मं कर्तुम् उद्यते, तत्र विधेयम् उत्तरम् आशु विधीयताम्। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गिरः प्रवृत्तिसाराः खलु।

भावार्थः-

अपने वक्तव्य का उपसंहार करते हुए अन्त में वनेचर दूत युधिष्ठिर से कहता है कि वह आपके प्रति दम्भ करने में लगा है, उसका प्रतीकार कीजिए। मुझ जैसों के वचन दूसरों की बातों से केवल तथ्य का प्रतिपादन करनेवाले होते हैं। निश्चित रूप से जैसी स्थिति है, वैसी मैंने बतला दी।

भाषार्थः- (तत् त्वयि जिह्मं कर्तुम् उद्यते) तो इसकारण आपके प्रति कपट करने में लगे हुए उस दुर्योधन के प्रति (तत्र विधेयम् उत्तरम् आशु विधीयताम्) जैसा प्रतीकार करना

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough."—Rabindranath Tagor

IND CamScanner App

Date __/__/____ Page No.: ____

उचित हो, उसे शीघ्र कीजिए। (परप्रणीतानि वचांसि चिन्वताम्) दूसरों द्वारा कहे गये वचनों का अनुसन्धान करनेवाले (मादृशां गिरः) मुझ जैसे दूतों के वचन में (प्रवृत्तिसाराः खलु) यथार्थ वार्तालाप ही होता है। अर्थात् हम केवल वृत्तान्त ही कह सकते हैं, शत्रु के प्रति क्या प्रतीकार करना चाहिए, इसके विषय में हम क्या कह सकते हैं?

पदव्याख्या –

तत् = तो। आशु = शीघ्र। त्वयि जिह्मं कर्तुम् उद्यते = आप पर कुटिलता करने के लिए उद्यत उस पर, जिह्म = कपट, दल। कृ + तुमुन् = कर्तुम्। उद्यते = सप्तमी एकवचन। उद् + यम् + क्त (कर्तरि)। तत्र विधेयम् उत्तरं विधीयताम् = उस पर या उसके प्रति किये जाने योग्य अगला कार्य कीजिए, प्रतीकार कीजिए। वि + धा + यत् (कर्मणि) = विधेयम्। वि + धा + लोट् = विधीयताम्। उत् + तर अथवा उद् + तॄ + अप् = उत्तरम्। उत्तरम् का अर्थ प्रतीकार भी हो सकता है। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वताम् = दूसरे द्वारा कहे गये वचनों को जुटाने वाले, एकत्र करने वाले, (षष्ठीएकव) परैः प्रणीतानि परप्रणीतानि। चिन्वताम् = चि + शतृ (षष्ठी बहुवचन)। मादृशां गिरः प्रवृत्तिसाराः खलु = मुझ जैसे दूतों के वचन यथार्थ वार्ता से ही युक्त होते हैं। प्रवृत्तिः सारः

IND CamScanner App

Date ___/___/_____ Page No. _____

यासां ताः (बहुव्रीहि), प्र+वृत्+क्तिन् (भावे) सारः = सृ+घञ् = सारः। मादृशाः = अहमिव दृश्यन्ते ते मादृशः। अथवा मामिव पश्यन्ति यान् ते। प्रवृत्तिसाराः = वर्णीकथनमेव सारो यासाम्॥ इति॥

IND CamScanner App